International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

हिन्दी की प्रयोजनीयता एवं अनुवाद

डॉ ए के बिन्दु[1], डॉ के जयलक्ष्मी[2]

[1]सह - प्राध्यापिका, हिन्दी विभाग, कोचीन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, एर्णाकुलम,केरल
[2]सह - प्राध्यापिका, भाषा विभाग, एस.एस.एल. वी.आई.टी. वेल्लोर, तमिलनाडू

सार : कुछ साल पहले तक हिन्दी मात्र साहित्यिक भाषा तक ही सीमित थी, प्रयोजनीयता के संदर्भ में इसका क्षेत्र इतना विकसित नहीं था और इंटरनेट पर हिन्दी का भविष्य न के बराबर था | पर आज भूमंडलीकरण के साथ सूचना और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में तेज़ी से परिवर्तन आ गया है | आज स्थिति बदल गयी है और हिन्दी सूचना एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में तहलका मचाते हुए क्रांति की वाहिका बन गयी है | प्रयोजनमूलकता के क्षेत्र में ही नहीं, रोजगार के क्षेत्र में भी संभावनाएँ बढ़ रही हैं | कई नए सॉफ्टवेयर, अनुवाद के क्षेत्र में कई उपकरण, सोशल मीडिया में भी हिन्दी का जलवा बिखर रहा है | इस प्रपत्र में हिन्दी की प्रयोजनीयता, इंटरनेट पर हिन्दी, हिन्दी का डिजिटलीकरण और अनुवाद पर प्रकाश डाला गया है |

मूल शब्द : *हिन्दी, प्रयोजनीयता, राजभाषा, जनसंचार, अनुवाद, इंटरनेट, टूल्स, पोर्टल ।*

भूमिका

“ सबकी भाषाएँ समृद्ध हो, हिन्दी है मेरी भाषा
पूरी हो मेरे भारत की , उससे आशा अभिलाषा”

हिन्दी के राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी की ये पंक्तियाँ ज़ाहिर करती हैं कि भाषा देश के इतिहास का आइना है जिसमें देश का भविष्य देखा जा सकता है। बहुत पहले ही रवीन्द्रनाथ टागोर ने कहा है कि भारतीय भाषाएँ नदियाँ हैं और हिन्दी महानदी। हिन्दी दुनिया की भाषा बने यह गांधिजी का सपना था। हिंदुस्तान की भाषा हिन्दी ही होगी ऐसा दृढ़ संकल्प लेकर बीबीसी के एक साक्षात्कार में उन्होंने अपने दिल की बात यों कहा है कि ‘दुनिया से कह दो गांधी अँग्रेजी भूल चुका है’। साहित्य, संस्कृति, दर्शन और कला से सुसंपन्न भारत की विशेषता रही है अनेकता में एकत्व की भावना। दरअसल हिन्दी भारत की एकमात्र ऐसी भाषा है जिसने क्षेत्रीय भाषायी विविधताओं के बावजूद पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक सभी को राष्ट्रीय एकता के सूत्र में पिरोया है। यह भारत की आत्मगौरव का प्रतीक है।

यद्यपि संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं को राष्ट्र की भाषाओं के रूप में समाहित किया गया है तो भी हिन्दी की समृद्धता और सुगमता के कारण राजभाषा के रूप में उसकी अपनी अहमियत है। अपनी लोकप्रियता से हिन्दी राजभाषा, संपर्क भाषा, जनभाषा जैसी सोपानों को पारकर विश्वभाषा की सर्वोच्च सीढ़ी पर पहुँच गई है।

राजभाषा के रूप में हिन्दी का विकास

14 सितंबर सन् 1949 को हिन्दी को राजभाषा घोषित करने के साथ इसके प्रयोग केलिए संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 तक विशेष प्रावधान दिए गए हैं। संविधान सभा द्वारा हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार करने के बाद वर्तमान स्थिति तक पहुँचने केलिए हिन्दी ने एक लंबा सफर तय किया है। केंद्र सरकार एवं इसके नियंत्रणाधीन सभी कार्यालयों, विभागों, उपक्रमों, निगमों, निकायों, राष्ट्रीयकृत बैंकों आदि में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्रदान करने के साथ-साथ उन्हें उनके कार्यालयीन कार्य में हिन्दी की दक्षता एवं कौशल प्रदान करना भी संस्थान की योजनाओं का मुख्य उद्देश्य रहा है। द्विभाषिकता एवं संवैधानिक प्रावधानों से पोषित राजभाषा हिन्दी ने अनुवाद के आधार पर अपनी विशिष्ट संरचना बना ली है। हिन्दी अधिकारियों,कनिष्ठ एवं वरिष्ठ अनुवादकों की आवश्यकता ने अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार के बड़ी संख्या में अवसर खोले हैं। प्रशासनिक हिन्दी और प्रशासनिक अनुवाद में बोधगम्यता, एकार्थता, विषय निष्ठता, भाषा की औपचारिकता, प्रशासनिक निर्धारित मानक शब्दावली का प्रयोग आदि पर विशेष रूप से ध्यान रखने की आवश्यकता है। केंद्र सरकार के समस्त कार्यालयों में राजभाषा के रूप में हिन्दी की जो संस्कृति है, वह काफी हद तक अनुवाद पर आधृत है।

भारतीय संविधान द्वारा खड़ीबोली हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने के साथ हिन्दी का परंपरागत अर्थ, स्वरूप तथा व्यवहार क्षेत्र व्यापक हो गया। दुनिया के जो भी भाषाएँ विकास के दौर में आगे आई है, अपनी प्रयोजनमूलकता के कारण प्रतिष्ठित हुई है। भूमंडलीकरण के दौर में प्रौद्योगिकी और संचार माध्यमों की बदौलत हिन्दी के क्षितिज का विशाल फ़लक बढ़ता चला जा रहा है। आज वाणिज्य, व्यापार, कला, संगीत, शिक्षा ,परिवहन, पर्यटन, साहित्य आदि क्षेत्रों में हिन्दी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिफल फल-फूल रही है। सन् 1981 में प्रसिद्ध भाषाविद डॉ. जयंतीप्रसाद नौटियाल ने विश्व में सर्वाधिक बोली जानेवाली भाषा के संबंध में शोध कार्य करना शुरू किया था तो हिन्दी का नाम मंदारिन और अँग्रेजी भाषाओं के साथ शीर्ष पर आया था। डॉ नौटियाल की सन् 2021 के भाषा शोध अध्ययन से यह सिद्ध हुआ कि विश्व में हिन्दी जाननेवालों की संख्या 1356 मिलियन है,अँग्रेजी जाननेवाले 1120 मिलियन है, तथा मंदारिन जाननेवाले 1120 मिलियन है। इस प्रकार विश्व में सबसे अधिक बोली जानेवाली

भाषा बन चुकी है हिन्दी। विश्व के 73 प्रमुख राष्ट्रों में करीब 180 विश्वविद्यालयों में हिन्दी का अध्ययन,अध्यापन तथा अनुसंधान का कार्य हो रहा है।

हिन्दी, जन संचार माध्यम एवं अनुवाद

हिन्दी का संप्रेषण सामर्थ्य अद्वितीय है | आज वैश्विक व्यवसायीकरण के कारण हिन्दी का प्रचार प्रसार हो रहा है और प्रयोजनीयता के हर कार्य क्षेत्र में यह विश्व भाषा बन रही है| हिन्दी और जन संचार माध्यम का समीकरण वर्तमान परिदृश्य में भारतीय ही नहीं, वैश्विक दृष्टि से उल्लेखनीय बन चुका है। प्रिंट मीडिया में समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं का स्थान बढ़ता जा रहा है | स्वतन्त्रता के बाद हिन्दी को बहुत अधिक गति मिली है | जब हिन्दी को राजभाषा घोषित किया गया तब हिन्दी के समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं का प्रसार भी बढ़ता गया और विश्व के प्रमुख शहरों से आज कई पत्रिकाएं छपने लगी हैं | आज ई-समाचार पत्र जैसे, नई दुनिया नवभारत टाइम्स, हिंदुस्तान, जागरण, पंजाब केसरी, राजस्थान पत्रिका, दैनिक भास्कर, प्रभात खबर, अमर उजाला आदि इसके प्रमुख उदाहरण हैं। ई-संस्करणों की तरह ही हिन्दी साहित्य को समर्पित कई पत्रिकाएँ हैं| ई-पत्रिकाओं में हिंदी नेस्ट, सृजन गाथा, अभिव्यक्ति, अनुभूति, शब्दांजलि, साहित्य कुंज, छाया, गर्भनाल, भारत दर्शन, वेब दुनिया, कल्याण आदि के साथ-साथ हंस, वागर्थ जैसी साहित्यिक पत्रिकाएँ तद्भव, नया मीडिया भारत दर्शन, वेब दुनिया, कल्याण आदि के साथ-साथ हंस, वागर्थ जैसी साहित्यिक पत्रिकाएँ एवं तद्भव, नया ज्ञानोदय, मधुमती आदि हिंदी वेब पत्रकारिता का अभिन्न अंग बन गए हैं। चाहे मुद्रित हो, इलेक्ट्रोनिक हो या नवइलेक्ट्रॉनिक सूचना का आदान-प्रदान करने में अनुवाद की अहम भूमिका रही है। अंतर्राष्ट्रीय समाचार समिति रायटर, ए.पी, पी.टी.ऐ, यू.टी.ऐ जैसी अँग्रेजी समितियों के अलावा अनेक भाषाओं में समाचार आती है। यहाँ अनुवाद लक्ष्य को सामने रखकर सभी भाषाओं में समाचार तैयार करने में सहायक बन जाता है।

इलेक्ट्रोनिक माध्यमों में हिन्दी के प्रसार में रेडियो की अहम भूमिका रही है | 1926 में पहली बार भारत में रेडियो का प्रसारण हुआ था| 1930 में भारत सरकार ने 'आकाशवाणी' नाम से इसे अपने अधीन कर लिया | 1949 में अहिंदी भाषा केन्द्रों में हिन्दी प्रशिक्षण के कार्यक्रम का प्रसारण शुरू किया गया | तब से अब तक रेडियो में कई साहित्यक एवं साहित्येतर कार्यक्रमों को आयोजित किया जा रहा है जिससे हिन्दी और सशक्त बन गयी है | इसका एक कारण था आकाशवाणी देश के 95% जन संख्या तक पहुँचती है| इसके कई चैनल जैसे विविध भारती, एफ. एम. के चित्रपट संगीत के प्रसारण ने हिन्दी के प्रयोजनीयता को बढावा देने में अपूर्व योगदान दिया है | देश-विदेश की विभिन्न भाषाओं में समाचार बुलेटिन आज हर भाषा में प्रसारित हो रहा है। अनेक देश अपने रेडियो पर हिन्दी कार्यक्रम प्रसारित कर रहे हैं जैसे बी. बी. सी, वॉइस ऑफ अमेरीका , जर्मनी के रेडियो कोलोन, ईरान की आ.ई.बी, दुबई में

एफएम स्टेशन, रेडियो मॉरीशस, विदेशों में एफएम और अन्य चैनलों आज अपनी सेवाएं हिन्दी में प्रसारित करते हैं। भाषायी आदान-प्रदान के समन्वय केलिए बी.बी सी हिन्दी भाषा का एक अंतर्राष्ट्रीय मंच सिद्ध हुआ है। बी.बी.सी हिन्दी डॉटकॉम से भी स्तंभकार और साहित्यिक पत्रकार के रूप में जुड़े रहे। विदेशों में जर्मनी के डायचेवेले ,जापान के एन.एच के वल्ड,चीन के चाइना रेडियो जैसी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी सेवा विशेष रूप से उल्लेखनीय है। देश और काल की सीमाओं का अतिक्रमण करने वाला एक साधन है अनुवाद ।

जिन सैटलाइट चानलों ने भारत में अपने कार्यक्रमों का आरंभ केवल अँग्रेजी में किया था, उन्हें अपनी भाषा नीति में परिवर्तन करना पड़ा। आज राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी की जो पहचान है, उसमें दूरदर्शन के समाचार चैनल, मनोरंजन, फिल्म प्रसारण, खेल, शिक्षा आदि चैनलों ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। हिन्दी चैनलों की संख्या बढ़ती जा रही है ,और इसी कारण से अंग्रेज़ी एवं विदेशी चैनलों का हिन्दी में रूपान्तरण हो रहा है | इसमें प्रमुख हैं डिस्कवरी चैनल, नेशनल ज्योग्राफिक चैनल, स्टार न्यूज, ईएसपीएन, स्टार स्पोर्ट्स, रूस, जर्मनी का डच वेले, जापान का एनएचके वर्ल्ड अपने हिंदी प्रसारण के लिए विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं | अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति के ओलंपिक चैनल ने हिंदी में अपना प्रसारण शुरू कर दिया है। खेलों से संबंधित समाचार, कहानियाँ, जानकारी भी हिंदी में उपलब्ध हैं और आज इसके हिन्दी प्रसारण ने हिंदी को विश्व स्तर पर एक मंच बनाने में प्रमुख भूमिका निभाई है।

रामायण,महाभारत जैसे अनेक धारावाहिक हिन्दी के साथ भारतीय भाषाओं में दिखाये जाते हैं। यह अनुवाद के ही एक महत्वपूर्ण स्वरूप डबिंग से खुली है । भाषागत यांत्रिक उपकरणों में ऐसी एक मशीन आ गई है जो फिल्मों आदि के उपशीर्षकों का भारतीय भाषाओं एवं विदेशी भाषाओं का भी लिप्यंतरण करती है। उपशीर्षकों की प्रक्रिया भी समाचारों में, मनोरंजन कार्यक्रमों में विशेष रूप से विदेशी फिल्मों के साथ अपनायी जा रही है। जुरासिक पार्क ,टाइटानिक,जंगलबुक,डिसनीलैंड जैसे अँग्रेजी के लोकप्रिय फिल्मों ,टेलिफ़िल्मों, धारावाहिकों आदि हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में देखे जा सकते हैं। होलीवुड ने भारत के बड़े बाज़ार को देखते हुए अपनी फिल्में हिन्दी में डब करना शुरू कर दी है। दूरदर्शन के हिन्दी चैनलों पर अन्य भाषाओं के अनूदित कार्यक्रमों का भी प्रसारण किया जाता है। अहिंदी कार्यक्रमों का हिन्दी अनुवाद तथा हिन्दी कार्यक्रमों का अहिंदी भाषा में अनुवाद करने से हिन्दी का क्षेत्र विस्तृत हो गया।

कम्प्यूटर, फोंट्स, हिन्दी और अनुवाद

कम्प्यूटर में अंग्रेज़ी का रथ सालों तक सवार था वह भूमंडलीकरण एवं बाज़ारीकरण ने हिन्दी को विश्व भाषा का दर्ज़ा देकर हिन्दी 'ग्लोबल हिन्दी' में रूपांतरित हो गया | 21 वीं सदी में जिसे हम कम्प्यूटर युग कहते हैं कम्प्यूटर, तकनीकी और विज्ञान के क्षेत्र में हिन्दी लगातार नए शिकार स्पर्श कर

रही है | और इस विकास ने यह ज़ाहिर किया है की कम्प्यूटर पर मात्र अंग्रेज़ी का ही आधिपत्य नहीं वरन हिन्दी भी अपना अधिकार जमा सकती ही | इस क्षेत्र में आए कई सॉफ्टवेयर और पैकेज ने यह प्रमाणित कर दिया है कि कम्प्यूटर पर अंग्रेज़ी का जो वर्चस्व था अब वह धीमी हो रही है और हिन्दी उस रथ पर सँवारने केलिए सुसज्जित हो गयी है |

कम्प्यूटर और हिन्दी भाषा की आगाज़ 1965 के आसपास हुआ और 70 के दशक में हिन्दी भाषा के विकास का नया खंड जुड़ गया | भारत सरकार ने कम्प्यूटर पर भारतीय भाषाओं के विकास के साथ राजभाषा हिन्दी पर विशेष ध्यान देते हुए सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय को इस क्षेत्र पर कार्य करने का भार सौंप दिया | सी - डेक ने आम भाषा में सॉफ्टवेयर उतारकर भाषा ज्ञान की समस्या को समाप्त कर दी साथ ही सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने ओ.आर.जी तकनीक के प्रयोग से भाषायी अंतराल को दूर कर दिया | इसके लिए 'शब्दिका' नामक सॉफ्टवेयर तैयार करवाया और फिर 'अनुस्मारक' सॉफ्टवेयर ईजाद किया गया जिसकी खासियत यह थी कि इसमें अन्य भारतीय भाषाओं के साथ अंतरण की सहूलियत थी | एम.ए.आई और एन. आई. एस.सी.ओ.एम ने प्रारंभ में 'भारत भाषा' परिकल्पना की शुरुआत गैर अंग्रेजी भाषी लोगों की आवश्यकता को पूरा करने के उद्देश से किया और कम्प्यूटर को भारतीय भाषा के अनुकूल बनाने का अहम कार्य किया | हिन्दी में कंप्यूटीकरण को बढ़ावा देने केलिए सरकारी स्तर पर ही नहीं,बल्कि गैर सरकारी स्तर पर भी अनेक संस्थाएँ हिन्दी सॉफ्टवेयर निर्माण में सक्रिय हैं। इस कड़ी में 'लीप ऑफिस', 'मैट', 'शब्दरत्न', 'सूलीपी', 'हिन्दी पी सी डॉस' आदि का कम्प्युटर पर हिन्दी के विकास में बहुत महत्वपूर्ण योगदान है |

हिन्दी को कंप्यूटर केलिए सर्वश्रेष्ठ भाषा माना जाता है। क्योंकि इसकी लिपि देवनागरी सबसे अधिक वैज्ञानिक है। देवनागरी की वैज्ञानिकता को ध्यान में रखकर द्वन्यात्मक एवं फ़ोनोग्राफिक कुंजीपटल प्रस्तावित किए गए । आज 'कंप्यूटर' अनुवाद के संदर्भ में अपना बहुआयामी व्यक्तित्व निभा रहा है। मशीनी अनुवाद इस संदर्भ में उल्लेखनीय है। विभिन्न भाषाओं में मशीनी अनुवाद सोफ्टवेयरों का निर्माण किया जा रहा है। एक बार मशीन सही या लगभग सही अनुवाद देना शुरू कर दे तो इसे अनेक आधुनिक अनुप्रयोगों से जोड़ा जा सकता है। इंटरनेट के द्वारा 'ऑनलाइन अनुवाद' प्रक्रिया सुलभ कर सकती है। दुतरफा अनुवाद (Reverse Translation) की सुविधा भी इसमें जोड़ी जा सकती है।

हिन्दी अनुवाद के क्षेत्र में कम्प्यूटर का योगदान अभूतपूर्व रहा है| इस दिशा में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर ने अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद केलिए 'कारपोर' नाम से कम्प्यूटर अनुवाद उपकरण का विकास किया जिसमें स्वास्थ्य मंत्रालय के मैनुअलों का मशीन अनुवाद किया गया | फिर 1995 में नेशनल कौंसिल फॉर सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी मुंबई ने 'मात्रा' उपकरण को विकसित किया | यह अंग्रेजी कथा समाचार कथाओं का हिन्दी में अनुवाद करता है | सी -डेक ने 'एन - ट्रांस' नाम का सॉफ्टवेयर प्रस्तुत किया जो

अंग्रेजी से भारतीय भाषाओं और विपरीत ढंग से अंग्रेजी में व्यक्तिवाचक संज्ञाओं का अनुवाद करता है| इसमें पहला भाग शब्दकोश है और दूसरा भाग सशक्त स्वत: प्रणाली विन्यास (Empowered automatic system configuration) जो संदर्भ स्रोत है | प्रिया इलेक्ट्रॉनिक्स, पुणे ने 'परिवर्तन' सॉफ्टवेयर बनाया जो हिन्दी में बनाई गयी किसी भी फ़ाइल को हिन्दी फॉन्ट या सॉफ्टवेयर में पढ़ने और फ़ाइल में लिखित सूचना प्राप्त करने का काम आसान कर दिया | इसमें फॉन्ट परिवर्तन का विकल्प भी प्राप्य है | 'मेट' एक ऐसा सॉफ्टवेयर है जिसमें अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद कार्य हो सकता है और इसे प्राकृतिक भाषा संसाधन प्रयोगशाला ने विकसित किया है | वाक्य शुद्धि, संपादन, वर्तनी जांच की सुविधा के साथ द्विभाषी शब्दकोश भी उपलब्ध है | 'मंत्र राजभाषा' एक ऐसा सॉफ्टवेयर है जो एक मशीन साधित अनुवाद टूल है| यह राजपत्रित अधिसूचना, कार्यालय आदेश, कार्यालय ज्ञापन, परिपत्र और वित्त से संबन्धित दस्तावेज़ों को हिन्दी में अनूदित करता है | इसमें अंग्रेजी के साथ हिन्दी व्याकरण की प्रस्तुति केलिए नियमानुरूप ट्री एडजोइनिंग ग्रैमर (Tree adjoining grammar - TAG) का उपयोग किया गया है | सी- डेक के applied artificial intelligence group ने इसे भारत सरकार के राजभाषा विभाग के प्रयोजनीयत केलिए निर्मित किया |

ऐसे कई सॉफ्टवेयर टूल्स है जिससे कंप्यूटर हिन्दी से अँग्रेजी में और अँग्रेजी से हिन्दी में लिप्यंतरण कर सकेगा। ऐ ऐ टी मुंबई, ऐ ऐ टी कानपुर, ऐ ऐ टी हैदराबाद, हैदराबाद विश्वविद्यालय, सी डैक पूणे जैसे कई अनुसंधान संस्थाओं में हिन्दी केलिए मशीनी अनुवाद प्रणाली का विकास तेज़ी से हो रहा है। हिन्दी के लिप्यंतरण को सरल बनानेवाले कई भाषा टूल्स भी मौजूद हैं। 'हिन्दी गाथा;हिन्दी के एक प्रमुख टूलबार है । 'रफ्तार' नामक सर्च इंजन से हिन्दी की किसी भी वेबसाइट पर जा सकता है। गूगल ने भी अँग्रेजी से हिन्दी अनुवाद की ऑनलाइन सुविधा उपभोक्ताओं केलिए उपलब्ध कराई है। हिन्दी वर्तनी जाँचक ,फॉन्ट परिवर्तक,लिपि परिवर्तक,उच्चारण संबंधी तकनीकी,हिन्दी में कही बात को पाठ में बदलने वाले सॉफ्टवेयर, हिन्दी-अँग्रेजी,अँग्रेजी-हिन्दी कोश, हिन्दी ई पुस्तकें,ई पत्र-पत्रिकाएँ , ई मेल के साथ कई सुविधाएं इंटरनेट पर मुहैया करती है। वर्तमान समय में इंटरनेट पर विभिन्न भाषा उपकरण मौजूद हैं जो हिंदी के लिप्यंतरण को सरल बनाते हैं| इनमें से कुछ नाम हैं गूगल इंडिक ट्रांसलेटर ,लिपिक रेमिंगटन, हिंदी कैलम ,यूएनआई -स्क्रिप्ट, लिपिकायेम ,प्रखर, देवनागरी लिपिक आदि ऐसे उपकरण हैं जिनमें ऑनलाइन हिंदी या अन्य में अनुवाद करने की सुविधा और सॉफ्टवेयर है| अंत: वर्तमान युग में, इंटरनेट पर विभिन्न भाषा उपकरण मौजूद हैं जो हिंदी के लिप्यंतरण को सरल बनाते हैं।

स्वच्छंद अनुवाद (Freelance Translation) की अहम भूमिका रही है। ट्रान्सलेशन मेमोरी सॉफ्टवेयर बहुत ही महत्वपूर्ण है,जिसमें विभिन्न भाषाओं के शब्दकोश हैं जो अनुवादक केलिए काफी सहायक है। आज इससे जुड़ी कई वेबसाइट उपलब्ध है,जो अनुवादक को अपनी मर्जी से एजेन्सी चुनने

केलिए विकल्प देती है। इनमें से कुछ साइट हैं-www.proz.com, www translator café.com,www.lyrical.com, one hour translation service, bhashabharati आदि अनुवाद सेवा जहाँ सामान्य लोग सिनेमा सबटाइटल्स, विज्ञापन, हैल्थ करे सेवाओं केलिए अनुवाद कर सकते हैं।

हिन्दी भाषा के विकास में हिन्दी फॉन्ट एवं वेबसाइट का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हिन्दी भाषा का पहला कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर 1977 में ई.सी.आई.एल. कंपनी, हैदराबाद ने 'फोर्टान' नाम से बाज़ार में निकाला | इसके बाद 'सिद्धार्थ', 'लिपी' नाम से टाइपिंग सॉफ्टवेयर आए | 'अक्षर','आकृति', 'सुलेखा' 'शब्दस्तान' 'श्रुति' जैसे सॉफ्टवेयर और फॉन्ट तैयार हुए | इससे काम तो आसान हो गया पर जब तक यह दूसरे कंप्यूटरों में मौजूद नहीं है इसे खोल नहीं सकते थे| लेकिन तकनीक में विकास के साथ इसमें भी कई परिवर्तन हुए | आज हिन्दी भाषा में कृतिदेव, श्रीलिपि, किरण इत्यादि फॉन्ट को यूनिकोड़ में परिवर्तित करने वाले कई ऑनलाइन उपकरण है जिसने हिन्दी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया जा रहा है। यूनिकोड़ पर आधारित एक नए फॉन्ट मंगल को माइक्रोसॉफ़्ट ने विकसित किया। इसके साथ ही तकनीकी क्षेत्र में सबसे बड़ा योगदान भारत सरकार की कंपनी सी- डेक पुणे ने किया | इन्होंने 'जिस्ट' नाम के सॉफ्टवेयर विकसित किया जो असल में एक कम्प्यूटर कार्ड है | इसे लगाने से सभी भारतीय भाषाओं के अक्षर कम्प्युटर स्क्रीन पर आ जाता है जिसका उपयोग और टाइपिंग की -बोर्ड की सहायता ली जा सकती है | इस चिप की खासियत यह है कि इसके द्वारा किसी भी बैंकिंग संस्थान अथवा वित्तीय संस्थान के डाटा प्रोसेसिंग कार्य हिन्दी में कर सकते हैं |

सोशल मीडिया और हिन्दी

सोशल मीडिया साइटों पर भी हिंदी की उपस्थिति बढ़ रही है। प्रचार-प्रसार के लिए फेसबुक एक लोकप्रिय माध्यम है ब्लॉग, फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्स एप, इंस्टाग्राम में हिंदी का प्रयोग हो रहा है। हिंदी की मांग बढ़ती जा रही है| सोशल मीडिया, डेवलपर्स ने ऐसे समाधान तैयार किए हैं जिनमें उपयोगकर्ता को इसके उपयोग में अधिक आसानी हो इसलिए बेहतर इंडिक की बोर्ड बनाए जा रहे हैं| प्रौद्योगिकी के विकास और भाषा चयन में आसानी, हिंदी और उससे जुड़ी भाषाओं के साथ जुड़ाव के कारण सोशल मीडिया पर हिंदी के प्रयोग का माहौल बढ़ रहा है। सिफी कंपनी ने सन् 2014 में पहला हिन्दी आधारित आंड्रोइड स्मार्टफोन लोंच करने का कार्य किया,जिसने पूरी तरह से हिन्दी कीबोर्ड और वॉइस इनपुट पर आधारित एक अनूठा एप्लिकेशन बनाया। डाटा प्रॉसेसर हिन्दी में बनने से अब कोर बैंकिंग में भी हिन्दी के प्रवेश की तैयारियाँ ज़ोरों पर है। सोनी लाइव, गूगल ट्रांसलेट जैसी सुविधाएं अनपढ़ लोगों केलिए मददगार साबित हुई है। अंतर्राष्ट्रीय ओलिम्पिक समिति के हिन्दी में प्रसारण, फेसबुक , ट्विटर , व्हाट्सआप , इन्स्टग्रम जैसे सोशल मीडिया में उज्वल कदम आदि हिन्दी भाषा के बहुआयामी स्तर को सूचित करते हैं। आज सभी

मोबाइल नेटवर्क द्वारा दिया जा रहा पॉकेट फ्रेंडली पैकेट डेटा बहुत उपयोगी है और एक आधुनिक उपकरण भी है जिसने हिंदी को और समृद्ध किया है। स्मार्ट फोन में कई ऐप्स होते हैं और उंगली के स्पर्श से पसंदीदा धारावाहिक गाने, समाचार, फिल्में आदि कभी भी, कहीं भी सुन एवं देख सकते हैं |

ब्लॉग, हिंदी और अनुवाद की भूमिका

हिंदी ब्लॉगिंग (जिसे हिंदी में चिठ्ठा कहा जाता है) ने एक समानांतर मीडिया का रूप ले लिया है। आलोक कुमार को हिंदी का पहला ब्लॉगर बनने का श्रेय जाता है| उन्होंने 21 अप्रैल 2003 को पहला हिंदी ब्लॉग 'नौ दो ग्यारह' लॉन्च किया | 'देवनागरी.नेट' नाम से एक हिंदी प्रोसेसर साइट बनाई। 2003 में देवनागरी लिपि में लिखने की सुविधा यूनिकोड ने हिंदी ब्लॉगिंग को पंख दिए। आज लगभग 50000 हिन्दी ब्लॉग, ब्लॉग जगत में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहे हैं। महिलाओं के लिए हिंदी ब्लॉगिंग की शुरुआत करने का श्रेय मध्य प्रदेश के इंदौर की पूजा को जाता है, जिन्होंने साल 2003 में 'कहीं अनकही' ब्लॉग के जरिए इसकी शुरुआत की थी। यह 'इंटरनेट अरचेवे' (Internet Archive) पर उपलब्ध है। हिंदी ब्लॉगिंग आज अत्यंत रचनात्मक और संभावनाओं से भरी है। उन्हें 'गिरगिट' नामक पहला ऑनलाइन फ़ॉन्ट कनवर्टर उपलब्ध कराने का श्रेय प्राप्त हुआ है। अनुनाद सिंह को यूनिकोड हिन्दी को ब्रेल लिपि में परिवर्तित करना का श्रेय जाता है । हिन्दी विकिपीडिया में एक लाख से अधिक पृष्ठ जोड़ने का कार्य अनुनाद सिंह के अथक प्रयास से ही संभव हो सका। उन्होंने हिंदी के लिए कई एक्सटेंशन मोज़िला फ़ायरफ़ॉक्स में बनाए । उन्होंने सरल हिंदी शब्दकोश अनुप्रयोग प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 'नारद-हिन्दी-ब्लॉग' (Archive' (http //narad.akshargram.com) फ़ीड एग्रीगेटर स्लाइड है, जो सभी हिंदी ब्लॉगों को एक पेज में संकलित करती है। इसका उद्देश्य राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी का प्रचार-प्रसार करना है |

हिन्दी के ब्लोगों को वैश्विक ज्ञान से परिपूर्ण करने केलिए ज्ञान के निर्माण के अभाव में हमें अनुवाद का सहारा लेना पड़ता है। यहाँ 'अनुवादक' जैसे सॉफ्टवेयर की भूमिका महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकती है। सृजनात्मक साहित्य और सूचनात्मक विचार को संप्रेक्षित करने में हिन्दी ब्लोगिंग सबसे शक्तिशाली विधा बन गयी है। 'हिन्दी होम पेज डॉट कॉम' हिन्दी का एक ऐसा पोर्टल है, जिसमें हिन्दी के बारे में सूचना संदर्भ समाचार,ज्ञान,शिक्षा और सेवाओं के समाधान केंद्र के रूप में विकसित किया जा रहा है। अनुवाद के जरिये हिन्दी तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में विज्ञापन भी आने लगे हैं। हिन्दी फिल्म, गीत,गजल और भजन भी हिन्दी के प्रचार-प्रसार में हाथ बंटाया है। शेयर बाज़ार की तमाम गतिविधियाँ अब हिन्दी में हैं ,क्योंकि आम लोगों की भागीदारी इसमें निरंतर बढ़ रही है। बिज़नस स्टैंडर्ड जैसा वित्तीय अकबार हिन्दी में अब उपलब्ध है।

ई-कॉमर्स एवं विज्ञापन में हिंदी की भूमिका

आज माइक्रोसॉफ्ट, याहू, रेडिफ आदि विदेशी कंपनियां अपनी वेबसाइट, ई-कॉमर्स विकसित कर रही हैं | सूचना प्रौद्योगिकी, ई-गवर्नेंस के क्षेत्र में भारत तेज़ी से बढ़ रहा है साथ ही हिंदी का महत्व भी। हिन्दी का महत्व एवं प्रयोग अपरिहार्य है। इसलिए बिक्री विस्तार पर नजर रखने वाली कंपनियों ने हिन्दी भाषा के प्रचार -प्रसार में उत्सुकता दिखाई है | ऑनलाइन ट्रेडिंग और शॉपिंग साइट्स जैसे फ्लिपकार्ट, अमेज़ॅन, सिफी, आदि; भारतीय जनसंख्या को ध्यान में रखते हुए हिंदी को आधारभूत मंच प्रदान की है। एडसेंस' जैसी हिंदी वेबसाइट की भाषा हिंदी है जो विज्ञापनदाताओं को उपभोक्ताओं से जुड़ने में मदद करता है। गूगल विज्ञापन; हिंदी विज्ञापनों का भी समर्थन करता है; गूगल डिस्प्ले नेटवर्क में विज्ञापनदाताओं को टेक्स्ट, वीडियो-डिस्प्ले, विज्ञापन प्रारूपों की छवियाँ आदि का उपयोग करके हिंदी के माध्यम से अपने विज्ञापनों के अभियान में मदद करता है | यूनिकोड का आना हिन्दी केलिए वरदान साबित हो रहा है। हिन्दी भाषा में वेबपेज तैयार करने हेतु पूणे की सी डैक कंपनी ने 'प्लग इन' पैकेज तैयार किया है, जिससे कोई भी व्यक्ति या संस्था अपना वेबपेज हिन्दी में प्रकाशित कर सकता है।

ऑनलाइन शिक्षण सॉफ्टवेयर और हिन्दी

वेब मीडिया वास्तव में सूचनाओं का सागर है। हिन्दी भाषा की व्याकरण संबंधी सूक्ष्मताओं के स्पष्टीकरण में इसकी भूमिका प्रशंसनीय है |. छात्रों को व्याकरण, शब्द उपयोग, निबंध आदि के लिए पाठ्य सामग्री से संबंधित उपयोगी जानकारी और अभ्यास मिलता है; साथ ही, हिंदी लेखन और सीखने का एक मंच बन गई है। आज विदेशी और गैर-हिन्दी भाषी लोग इन साइटों के माध्यम से आसानी से हिन्दी पढ़ सकते हैं। इस संदर्भ में ई-लर्निंग का विशेष महत्व है। भारतीय भाषाओं के लिए एक उपयोगी सॉफ्टवेयर पैकेज विकसित करने की दृष्टि से, सी-डैक पुणे ने हिंदी सीखने के लिए दो मल्टीमीडिया सॉफ्टवेयर पैकेज डिजाइन किए हैं - लीला हिंदी स्वयं शिक्षक (विदेशियों के लिए) और लीला हिंदी प्रबोध सॉफ्टवेयर (सरकारी कर्मचारियों के लिए राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित) सॉफ़्टवेयर पैकेज । इन दोनों पैकेजों में पाठों और शब्दों का उच्चारण सुनने, अपनी आवाज को टेप करने और स्पीच कार्ड की मदद से विस्तृत अभ्यास करने की सुविधा उपलब्ध है । इसके अलावा हिन्दी लिखने-सीखने केलिए कुछ प्रमुख साइट्स भी हैं-Speak Hindi.com, Hindi Language.com , Learning Hindi .com, Fluent in 3 months.com आदि। इसके साथ विदेशियों को भाषा सीखने केलिए 'डियुलिंगो' नामक एक app भी है। हिन्दी के बढ़ते हुए महत्व को देखकर इसमें हिन्दी भी जोड़ा गया है, जिससे लिखित और मौखिक दोनों पढ़ सकते हैं। इस प्रकार विदेशियों को आसानी से हिन्दी सीखने की सुविधा इंटरनेट के हिन्दी सॉफ्टवेयर कार्यक्रमों में प्रदान की जा रही है, जिससे हिन्दी भाषा की प्रकृति एवं प्रवृत्ति में वृद्धी हो रही है। हिन्दी

प्रबोध,प्रवीण एवं प्राज्ञा पाठ्यक्रम के प्रशिक्षण के मूल्यांकन हेतु ऑनलाइन परीक्षा प्रणाली का भी विकास किया जा रहा है। द्विभाषी-द्विआयामी अँग्रेजी-हिन्दी उच्चारण सहित ई महाशब्दकोश का विकास किया गया है। इस संदर्भ में 2009 में, अली तकी, का योगदान सराहनीय रहा है | अपने अमेरिकी मित्र के साथ, 'जबान' नाम से 2011 में स्काइप के माध्यम से विदेशियों को हिन्दी सिखाने की साइट शुरू की, जिसमें 490 पाठ वितरित किए गए | आज विदेशी और गैर-हिन्दी भाषी लोग इन साइटों के माध्यम से आसानी से हिन्दी पढ़ सकते हैं। अत: इंटरनेट ने हिन्दी भाषा को बहुआयामी रूप देना प्रारम्भ कर दिया है। इस संदर्भ में ई-लर्निंग का विशेष महत्व है।

हिन्दी के प्रचार-प्रसार केलिए कार्यरत देश-विदेश की कई संस्थाओं में वर्धा के राजभाषा के प्रचार समिति,प्रयाग के हिन्दी साहित्य सम्मेलन, मौरीशियस के हिन्दी प्रचारिणी सभा,अमेरिका के अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी परिषद आदि उल्लेखनीय हैं। देश-विदेश के साहित्यिक कृतियों का अनुवाद,प्रवासी साहित्य और साहित्यकारों की भूमिका,विश्व हिन्दी सम्मेलन जैसी संस्थाएँ हिन्दी को विश्वभाषा बनाने में अहम भूमिका निभायी हैं।

हिंदी के प्रचार-प्रसार में वेब मीडिया ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वेब मीडिया को अपनी सूचना, मनोरंजन और लोकप्रिय संस्कृति के सामान बेचने के लिए हिंदी को स्वीकार करना पड़ा, जिससे उपभोक्ताओं की संख्या बढ़ सके। आज भारत ही नहीं बल्कि पूरा विश्व हिंदी के वैश्विक परिदृश्य और प्रभाव से परिचित हो रहा है। ई-जर्नल्स और ई-पत्रिकाओं ने न सिर्फ राष्ट्रीय स्तर पर बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी के प्रचार-प्रसार को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने में अहम भूमिका निभा रही है | किसी भी देश की अस्मिता का द्योतक वहाँ की भाषा होती है। बहरहाल संचार क्रान्ति के रथ पर सवार भूमंडलीकरण ने जिस तरह देशों की दूरियाँ मिटा दी है उसी तरह बाजारवाद ने भाषाओं के अंतर पाट दिए हैं। हिन्दी आज विश्व में सबसे लोकप्रिय एवं मुनाफे की भाषा है। बाजारी शक्तियों द्वारा बनाई हिन्दी लोगों को रोजगार एवं रोटी भी दे रही है। अनुवाद के ज़रिए उनके बीच गतिशील संवाद कायम किए हैं। प्रशासनिक,साहित्य या सृजन के क्षेत्र में हो,मीडिया या शिक्षा के क्षेत्र में हो हिन्दी भाषा की प्रगति केलिए ठोस कदम उठाना हमारा कर्तव्य है। वस्तुत: सूचना एवं प्रौद्योगिकी के इस युग में हिन्दी ने वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बना ली है | दरअसल हिन्दी देश के माथे की बिंदी है।

संदर्भ ग्रंथ

1. प्रो. रामलखन मीना, हिंदी सीखना क्यों ज़रूरी है, जनवरी 2017
2. डॉ. मनीष कुमार मिश्र, वेबमीडिया और हिंदी का वैश्विक परिचय, हिंदी युग्म, 2013।
3. मार्शल मैकलुहान- विकिपीडिया,https://en.m.wikipedia.org।

4. हिंदीकुंज.कॉम
5. https://retail.इकोनॉमिकटाइम्स.इंडियाटाइम्स.com/news/e-commerce/e-tailing/flipkart-launches-hindi इंटरफ़ेस-टू-टैप-नेक्स्ट-200-mn-online-shoppers/709
6. गुरमीत सिंह, सूचना प्रौद्योगिकी की क्रांति की वाहक बनती हिन्दी, राजभाषाभारती ISSN- 0970 - 9398